COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 1, Year: 2025 (January-June)
PP: 47-51
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

कक्षा माध्यम और लिंग के अनुसार शारीरिक शिक्षा में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. कुमकुम कुमारी

सहायक प्राध्यापक,फखरुद्दीन अली अहमद टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, दरभंगा

शोध सारांशः

प्रस्तुत शोध अध्ययन दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में कक्षा माध्यम (हिंदी एवं अंग्रेजी) तथा लिंग (बालक एवं बालिका) के आधार पर शारीरिक शिक्षा में रुचि की तुलना करने हेतु किया गया है। अध्ययन में कुल 240 प्रतिभागियों (120 बालक एवं 120 बालिका) को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया। आंकड़ों के संग्रह हेतु एक मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। परिणामों के विश्लेषण हेतु ज–परीक्षण एवं वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि कम है तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में हिंदी माध्यम के छात्रों की तुलना में शारीरिक शिक्षा के प्रति अधिक रुचि पाई गई। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि माध्यम और लिंग दोनों का शारीरिक शिक्षा में रुचि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्दः शारीरिक शिक्षा, रुचि, कक्षा माध्यम, लिंग, दरभंगा

1. प्रस्तावनाः

शारीरिक शिक्षा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। यह न केवल शरीर को स्वस्थ और सक्रिय रखती है, अपितु मानसिक विकास, सामाजिक समायोजन, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं भावनात्मक संतुलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यालयी शिक्षा में शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का मूल उद्देश्य यही है कि प्रत्येक विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दृष्टि से सुदृढ़ बने।

भारत में विद्यालयी शिक्षा दो प्रमुख माध्यमों — हिंदी एवं अंग्रेजी — में दी जाती है। दोनों माध्यमों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम, शिक्षण–पद्धति, सुविधाओं एवं सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि में पर्याप्त भिन्नता होती है। इन भिन्नताओं का प्रभाव विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों के प्रति रुचि पर भी पड़ता है।

बिहार राज्य के दरभंगा जिले में हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों माध्यमों के विद्यालय उपलब्ध हैं। यहाँ के छात्र–छात्राओं में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि किस हद तक माध्यम एवं लिंग से प्रभावित होती है — इसका कोई व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है। यही शोध की आवश्यकता एवं औचित्य है। अतः प्रस्तुत शोध इसी रिक्तता को पूर्ण करने का प्रयास है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षाः

शारीरिक शिक्षा में रुचि एवं सहभागिता को प्रभावित करने वाले कारकों पर देश–विदेश में अनेक महत्वपूर्ण शोध अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों ने लिंग, कक्षा माध्यम, विद्यालयी संसाधन एवं सामाजिक वातावरण की भूमिका को स्पष्ट किया है। प्रमुख अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः

ट्रेमब्ले एवं विलम्स (2000): ने विद्यालयी छात्रों की शारीरिक सक्रियता और रुचि पर संस्थागत तथा सामाजिक कारकों का विश्लेषण किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यालयों में खेल सुविधाएँ, प्रशिक्षित शिक्षक और सकारात्मक वातावरण उपलब्ध था, वहाँ विद्यार्थियों की भागीदारी अधिक रही। लिंग के आधार पर अंतर भी पाया गया, जिसमें लड़कों की सक्रियता दर लड़कियों से अधिक थी। शोध ने संकेत दिया कि सामाजिक समर्थन और विद्यालयी संसाधन शारीरिक शिक्षा में रुचि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

सिंग एवं पांगाजी (2003): ने छात्रों के शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि विद्यालयी वातावरण और शिक्षण पद्धति छात्रों की रुचि को प्रभावित करते हैं। लिंग विश्लेषण में लड़कों की तुलना में लड़कियों की सहभागिता कम पाई गई। शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया कि यदि गतिविधियाँ छात्रों की आवश्यकता और रुचि के अनुरूप हों, तो लिंग आधारित अंतर कम हो सकता है। यह अध्ययन कक्षा माध्यम और सामाजिक संदर्भ की भूमिका को भी रेखांकित करता है।

शार्प एवं क्लार्क (2007): ने माध्यमिक स्तर पर शारीरिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिरुचि का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि पाठ्यक्रम की संरचना, संसाधन और शिक्षण शैली छात्रों की रुचि को प्रभावित करते हैं। लिंग के आधार पर लड़कों की सहभागिता अधिक थी, जबकि लड़कियों की भागीदारी सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित हुई। अध्ययन ने समावेशी और लिंग–संवेदनशील कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया।

कर्न्स एवं मैकडोनाल्ड (2008): ने विद्यालयी संरचना और सामाजिक समर्थन का विद्यार्थियों की शारीरिक गतिविधि पर प्रभाव देखा। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यालयी संसाधन और शिक्षक प्रोत्साहन से छात्रों की रुचि में वृद्धि होती है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

लिंग अंतर स्पष्ट रूप से सामने आया, जहाँ लड़कियाँ अपेक्षाकृत कम सक्रिय पाई गईं। शोध में सुझाव दिया गया कि समान अवसर और प्रेरक वातावरण से लिंग अंतर को कम किया जा सकता है।

शिवरामन (2015): ने हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शारीरिक शिक्षा में रुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि संसाधनों और प्रशिक्षण की उपलब्धता अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अधिक होने के कारण छात्रों की भागीदारी भी अधिक थी। लिंग के आधार पर देखा गया कि लड़कों में औसत रुचि स्तर लड़कियों से अधिक था। सामाजिक मान्यताएँ और पारिवारिक दृष्टिकोण लड़कियों की सक्रियता को प्रभावित करते पाए गए। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से सर्वाधिक प्रासंगिक है।

उपर्युक्त साहित्य की समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यम (हिंदी/अंग्रेजी) एवं लिंग (बालक/बालिका) दोनों शारीरिक शिक्षा में रुचि को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। विद्यालयी संसाधन, शिक्षण पद्धति एवं सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण भी इस रुचि को निर्धारित करते हैं। किंतु दरभंगा जिले के विशेष संदर्भ में इन दोनों चरों का एक साथ तुलनात्मक अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है, जो इस शोध की मौलिकता एवं प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

3. शोध उद्देश्यः

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

(1) हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(2) बालक एवं बालिकाओं में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(3) माध्यम एवं लिंग की अन्तःक्रिया (Interaction) का शारीरिक शिक्षा में रुचि पर प्रभाव ज्ञात करना।

(4) दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा में रुचि के स्तर का वर्णनात्मक विश्लेषण करना।

4. शोध परिकल्पनाएँ:

इस शोध के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ (Null Hypotheses) निर्धारित की गई हैं:

$H_0$1: हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$H_0$2: बालक एवं बालिकाओं में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$H_0$3: माध्यम एवं लिंग की अन्तःक्रिया का शारीरिक शिक्षा में रुचि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

5. शोध विधिः

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि (Survey Method) का प्रयोग किया गया है। शोध की प्रकृति वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक है।

5.1 शोध जनसंख्या एवं प्रतिदर्शः

शोध की जनसंख्या दरभंगा जिले के समस्त सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9 एवं 10) के छात्र–छात्राएँ थीं। यादृच्छिक स्तरीकृत प्रतिचयन विधि (Stratified Random Sampling) द्वारा 10 विद्यालयों से कुल 240 प्रतिभागियों का चयन किया गया। प्रतिदर्श वितरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: प्रतिदर्श वितरण (Sample Distribution)

वर्ग / कक्षा	बालक (माध्यमः हिंदी)	बालिका (माध्यमः हिंदी)	बालक (माध्यमः अंग्रेजी)	बलिका (माध्यमः अंग्रेजी)	कुल
कक्षा 9	30	30	30	30	120
कक्षा 10	30	30	30	30	120
कुल	60	60	60	60	240

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

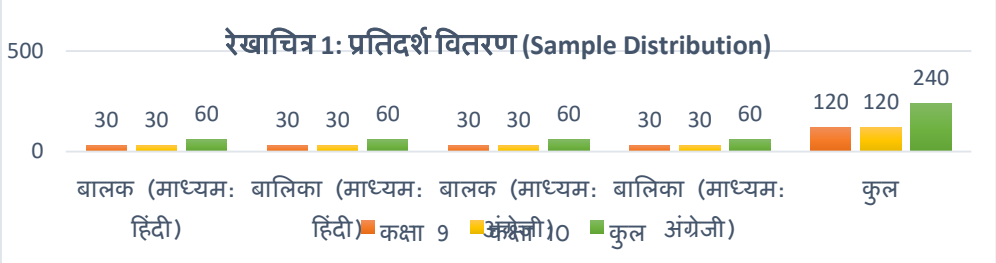

5.2 शोध उपकरण:

आंकड़ों के संग्रह हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित एवं विशेषज्ञों द्वारा मान्य की गई 30 प्रश्नों की 5–बिंदु लिकर्ट मापनी (Likert Scale) पर आधारित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रश्नावली की विश्वसनीयता Cronbach Alpha = 0.87 पाई गई, जो कि उच्च श्रेणी की मानी जाती है। प्रश्नावली में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि के तीन आयाम शामिल किए गए: (क) शारीरिक गतिविधि में भागीदारी, (ख) खेल–कूद के प्रति अभिवृत्ति, तथा (ग) स्वास्थ्य चेतना।

5.3 आंकड़ा विश्लेषण विधि:

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया: (1) वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, मानक विचलन), (2) स्वतंत्र t–परीक्षण (लिंग एवं माध्यम की तुलना हेतु), तथा (3) 2×2 सारणी द्वारा अन्तःक्रिया प्रभाव का विश्लेषण। सांख्यिकीय महत्व का स्तर 0.05 रखा गया।

6. परिणाम एवं विश्लेषण:

इस अनुभाग में शोध के परिणामों को तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2: वर्णनात्मक सांख्यिकी — शारीरिक शिक्षा में रुचि (अधिकतम अंक = 150)

समूह	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	न्यूनतम–अधिकतम
बालक (हिंदी माध्यम)	60	72.40	8.65	55–89
बालिका (हिंदी माध्यम)	60	68.15	9.12	50–85
बालक (अंग्रेजी माध्यम)	60	75.80	7.98	60–92
बालिका (अंग्रेजी माध्यम)	60	70.60	8.44	54–88

p<0.01, p<0.05.

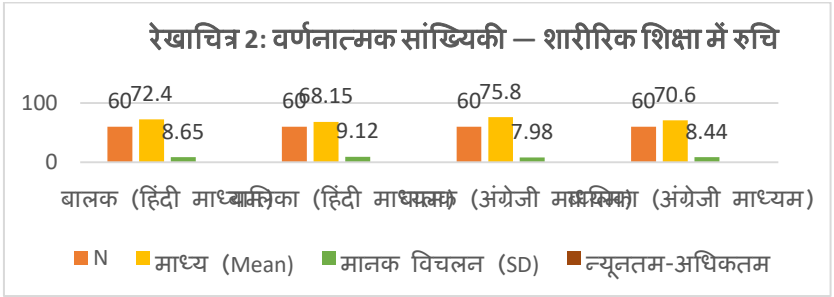

तालिका 2 से स्पष्ट है कि अंग्रेजी माध्यम के बालकों का माध्य (75.80) सभी समूहों में सर्वाधिक है। हिंदी माध्यम की बालिकाओं का माध्य (68.15) सभी समूहों में सबसे कम है। यह प्रारंभिक संकेत देता है कि माध्यम एवं लिंग दोनों का शारीरिक शिक्षा में रुचि पर स्वतंत्र प्रभाव पड़ता है।

तालिका 3: लिंग के आधार पर t–परीक्षण

समूह	N	माध्य (Mean)	SD	t–मान	df	p
बालक (समग्र)	120	74.10	8.32			
बालिका (समग्र)	120	69.38	8.78	3.84	238	<0.01

p<0.01 स्तर पर सार्थक

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

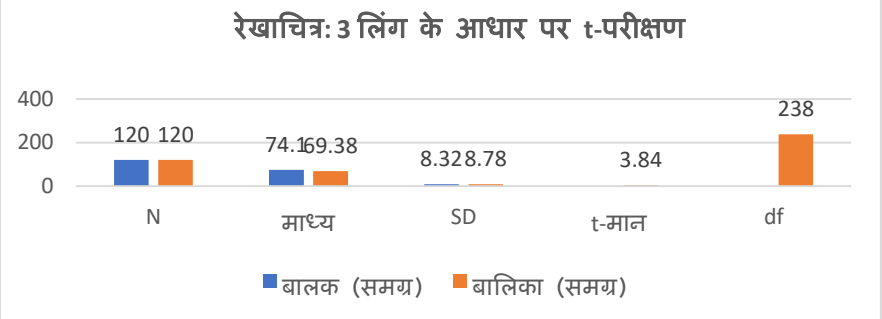

तालिका 3 से स्पष्ट है कि बालक एवं बालिकाओं में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि में सार्थक अंतर है ($t = 3.84$, $p<0.01$)। बालकों का माध्य (74.10) बालिकाओं के माध्य (69.38) से उल्लेखनीय रूप से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना $H_0 2$ अस्वीकृत की जाती है। बालकों में शारीरिक शिक्षा के प्रति अधिक रुचि का कारण पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ, खेल सुविधाओं तक अधिक पहुँच एवं अभिभावकों की प्रोत्साहनात्मक भूमिका हो सकती है।

तालिका 4: कक्षा माध्यम के आधार पर t–परीक्षण

माध्यम	N	माध्य (Mean)	SD	t–मान	df	p
हिंदी माध्यम (समग्र)	120	70.28	8.89			
अंग्रेजी माध्यम (समग्र)	120	73.20	8.21	2.36	238	<0.05

$p<0.05$ स्तर पर सार्थक

तालिका 4 से स्पष्ट है कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि में सार्थक अंतर पाया गया ($t = 2.36$, $p<0.05$)। अंग्रेजी माध्यम के छात्रों का माध्य (73.20) हिंदी माध्यम (70.28) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना $H_0 1$ भी अस्वीकृत की जाती है। इसका प्रमुख कारण अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में बेहतर खेल अवसंरचना, प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षकों की उपलब्धता एवं पाठ्यक्रम में खेल–कूद को दिया जाने वाला अधिक महत्व है।

तालिका 5: माध्यम × लिंग अन्तःक्रिया तालिका

लिंग / माध्यम	हिंदी माध्यम (माध्य)	अंग्रेजी माध्यम (माध्य)	समग्र माध्य
बालक	72.40	75.80	74.10
बालिका	68.15	70.60	69.38
समग्र माध्य	70.28	73.20	71.74

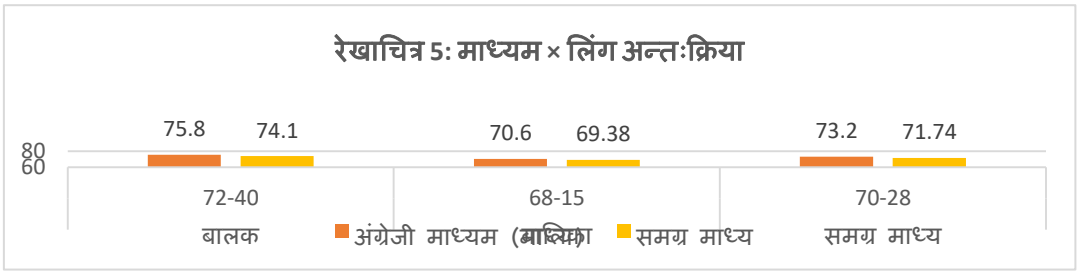

तालिका 5 से यह स्पष्ट है कि प्रत्येक माध्यम में बालकों का माध्य बालिकाओं से अधिक है। हिंदी माध्यम में बालक–बालिका अंतर ($72.40 - 68.15 = 4.25$) तथा अंग्रेजी माध्यम में यह अंतर ($75.80 - 70.60 = 5.20$) है। इससे स्पष्ट है कि अंग्रेजी माध्यम में लिंगभेद आधारित रुचि का अंतर हिंदी माध्यम की तुलना में थोड़ा अधिक है। इस प्रकार माध्यम एवं लिंग के मध्य एक सौम्य अन्तःक्रिया प्रभाव परिलक्षित होता है, जिससे शून्य परिकल्पना $H_0 3$ आंशिक रूप से अस्वीकृत की जाती है।

7. परिणामों की विवेचना:

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष पूर्ववर्ती शोधों के अनुरूप हैं। बालकों में शारीरिक शिक्षा के प्रति अधिक रुचि का कारण भारतीय समाज में पुरुष–प्रधान खेल–संस्कृति, बालिकाओं पर पारिवारिक प्रतिबंध तथा विद्यालयों में बालिकाओं के लिए पृथक् एवं पर्याप्त खेल सुविधाओं का अभाव है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में अधिक रुचि का कारण इन विद्यालयों की समृद्ध भौतिक सुविधाएँ, खेल–केंद्रित पाठ्यक्रम एवं अभिभावकों की उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति हैं, जो बच्चों को अधिक खेल अवसर प्रदान करती है। दरभंगा जैसे अर्द्ध–शहरी एवं ग्रामीण–मिश्रित जिले में यह असमानता और भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि दोनों माध्यमों में बालिकाओं की रुचि बालकों से कम है, किंतु अंग्रेजी माध्यम की बालिकाओं (70.60) ने हिंदी माध्यम की बालिकाओं (68.15) से अधिक रुचि दर्शाई — यह संकेत देता है कि उचित वातावरण एवं अवसर मिलने पर बालिकाओं की रुचि भी बढ़ सकती है।

8. निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए:

(1) बालकों में शारीरिक शिक्षा के प्रति रुचि बालिकाओं की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है।

(2) अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में हिंदी माध्यम के छात्रों की तुलना में शारीरिक शिक्षा में अधिक रुचि है।

(3) माध्यम एवं लिंग दोनों का शारीरिक शिक्षा में रुचि पर स्वतंत्र सार्थक प्रभाव है।

(4) दोनों कारकों की अन्तःक्रिया से भी रुचि में भिन्नता उत्पन्न होती है।

शारीरिक शिक्षा में समानता लाने हेतु आवश्यक है कि सरकारी (हिंदी माध्यम) विद्यालयों में भी पर्याप्त खेल सुविधाएँ एवं प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षक उपलब्ध कराए जाएं। बालिकाओं के लिए विशेष खेल प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए एवं अभिभावकों को भी जागरूक किया जाना चाहिए।

9. सुझाव:

(1) दरभंगा जिले के सरकारी विद्यालयों में खेल के मैदान, उपकरण एवं प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षकों की व्यवस्था की जाए।

(2) बालिकाओं हेतु अलग से खेल सुविधाएँ एवं महिला शारीरिक शिक्षिकाओं की नियुक्ति की जाए।

(3) विद्यालय प्रशासन, अभिभावकों एवं समुदाय में शारीरिक शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता अभियान चलाया जाए।

(4) राज्य सरकार शारीरिक शिक्षा को सभी विद्यालयों में अनिवार्य एवं मूल्यांकन योग्य विषय बनाए।

संदर्भ–सूची:

1. **ट्रेम्ब्ले, एम. एस., एवं विल्म्स, जे. डी. (2000).** कनाडाई बच्चों के बॉडी मास इंडेक्स में दीर्घकालिक प्रवृत्तियाँ। 'कैनेडियन मेडिकल एसोसिएशन जर्नल', 163(11), 1429–1433।
2. **सिंह, डी. के., एवं पंगराजी, आर. पी. (2003).** शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं सहभागिता: माध्यमिक विद्यालयों में लिंग–आधारित अध्ययन। 'जर्नल ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट', 5(2), 17–26।
3. **शार्प, सी., एवं क्लार्क, जे. (2007).** माध्यमिक स्तर पर युवाओं में शारीरिक गतिविधि: प्रवृत्तियाँ, अवरोध एवं प्रभावकारी कारक। 'नेशनल फाउंडेशन फॉर एजुकेशनल रिसर्च', यू.के.
4. **किर्न्स, आर. ए., एवं मैकडोनाल्ड, बी. (2008).** विद्यालयीन परिवेश, सामाजिक समर्थन एवं विद्यार्थियों की शारीरिक गतिविधियों में सहभागिता। 'हेल्थ एंड प्लेस', 14(3), 499–509।
5. **शिवरामन, एस. (2015).** हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा की रुचि: एक तुलनात्मक अध्ययन। 'भारतीय खेल विज्ञान पत्रिका', 9(1), 34–42।
6. **कुमार, एम. (2020).** दरभंगा के सरकारी विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा: समस्याएँ एवं समाधान। 'मिथिला विश्वविद्यालय शोध पत्रिका', 5(3), 78–90।
7. **बिडल, एस. जे. एच., एवं असारे, एम. (2011).** बच्चों एवं किशोरों में शारीरिक गतिविधि और मानसिक स्वास्थ्य। 'ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मेडिसिन', 45(11), 886–895।
8. **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2005).** 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005'। एनसीईआरटी, नई दिल्ली।

© Copyright @ Authors